The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 1 - 2018

बाल्यावस्था की शिक्षा व्यवस्था में फ्रेडरिक फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों का योगदान

राजकिशोर यादव*

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है। व्यक्ति की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है। उसे वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। उसे जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होता है। शिक्षा स्थिर नही है यह एक गतिशील प्रक्रिया है। समय के साथ–साथ इसके अर्थ और उद्देश्य में परिवर्तन होता रहा है।

बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम् आवश्कता है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। इस प्रकार "शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है।" जिस प्रकार एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान तथा विद्वान बनाती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है इस तरह व्यक्ति तथा समाज दोनों ही के विकास में शिक्षा परम् आवश्यक है। संक्षेप में "जन्मजात शक्तियों का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा है।"

शिशु शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के श्रेय जर्मनी के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री फ्रेडरिक फ्रोबेल को जाता है। शिशु शिक्षा में 'किण्डरगार्टन' का अत्यधिक महत्व है– इस संप्रत्यय के प्रतिपादक फ्रोबेल है। उन्होंने शिक्षा में खेल के महत्व को रेखांकित करते हुए शिक्षण–अधिगम में उत्पादक क्रिया पर जोर दिया। उनके द्वारा शिशु एवं बालक को दिये जाने वाले 'उपहारों' का आधार मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है– जहाँ वस्तुओं के माध्यम से सरलता से सीखने पर जोर है।

ऑगस्त फ्रोबेल का जन्म दक्षिणी जर्मनी के थुरिन्जियन वन के ओबरवीसबैच नामक ग्राम में 21 अप्रैल, 1782 को हुआ था। उसका बचपन बड़ा कष्टमय तथा उपेक्षामय बीता। उनकी माता का देहान्त उनके 9 माह की आयु में ही हो गया और पिता ने उनकी सदैव उपेक्षा की। बहुत शीघ्र ही पिता के उपेक्षामय सम्बन्धों का स्थान विमाता के भावनाहीन घृणामय सम्बन्धों ने ले लिया। उनके पिता पादरी थे, अतः अपने काम में व्यस्त रहा करते थे। इससे एक लाभ भी था कि फ्रोबेल के घर का वातावरण धार्मिक हो गया और सम्भवतः यहीं उनके जीवन पर धर्म की छाप पड़ी।

*शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र), शिक्षक शिक्षा–संकाय, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

घर के वातावरण की विमुखता ने उसे आत्मनिष्ठ भी बना दिया था। फलतः उसने प्रकृति के आँचल में, जंगलों में–उपत्यकाओं में, पहाड़ियों में शरणी ली। प्रारम्भ से ही इस आदत का फल यह हुआ कि उसे अन्तर्दर्शन की आदत भी बन गयी। जड़ प्रकृति में भी उसे अपना स्वरूप दिखाई पड़ने लगा थां यही अनुभव आगे चलकर उसके ''अनेकता में एकता'' के सिद्धान्त का रूप ग्रहण करता है।

फ्रोबेल व्यक्ति के विकास में बचपन को बहुत महत्व देता हैं उसके अनुसार प्रारम्भिक अनुभवों की भित्ती पर ही भावी जीवन–भवन खड़ा किया जा सकता है इसके अतिरिक्त उसे बचपन में बड़ा कष्ट हुआ था। पेस्तॉलॉत्सी ने माता की शिक्षण की ओर ध्यान देकर छोटे बच्चों की शिक्षण का भार उन्हीं पर छोड़ दिया था।

फ्रोबेल का माता की योग्यता में पूर्ण विश्वास नहीं। वह उनकी शिक्षण काभी उल्लेख करता है, परन्तु छोटे बच्चों के शिक्षण का भार माता पर ही छोड़ना उसे श्रेयकर न लगा। इन सब कारणों से छोटे बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना उसके लिये स्वाभाविक ही था।

फ्रोबेल के शैक्षिक विचार

फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों पर पश्चिम के कई आदर्शवादी दार्शनिकों यथा काण्ट, फिक्टे, शैलिंग, हीगल आदि के विचारों का व्यापक प्रभाव है। शैलिंग एवं हीगल के दर्शन के आधार पर फ्रोबेल ने अपना 'एकता का सिद्धान्त' का विकास किया।

फ्रोबेल पर आधुनिक विज्ञान के अध्ययन का भी प्रभाव पड़ा। साथ ही उन्होंने प्रगतिशील शिक्षाशास्त्रियों जैसे कमेनियस, रूसो आदि के कार्यों का अध्ययन किया तथा पेस्टोलॉजी के प्रयोगों का स्वयं निरीक्षण किया। इन सबने फ्रोबेल के दर्शन को प्रभावित किया। इतने व्यापक अध्ययन निरीक्षण एवं अनुभवों ने फ्रोबेल के विचारों में जटिलता भरी है पर इन सब में उसकी निरीक्षण शक्ति सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई।

फ्रोबेल के अनुसार शिक्षा बालक के विकास की सीढ़ी है। यही उसे उच्च स्तर पर ले जाती है और समाज के लिए एक उपयोगी व्यक्ति बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही उसे यह बोध होता है कि वह प्रकृति का एक अंग है। सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए अपना पूर्ण देने की महत्वाकांक्षा उसके अन्दर शिक्षा के ही माध्यम से उत्पन्न होती है।

फ्रोबेल की यह मान्यता है कि शिक्षा व्यवस्था का कार्य विद्यार्थियों को उपयुक्त वातावरण एवं अवसर प्रदान करना है ताकि विद्यार्थी अन्तर्निहित संभावनाओं एवं क्षमताओं के अनुरूप अधिक से अधिक विकास कर सके। विकास वस्तुतः अन्दर से आरम्भ होता है। बाहर से इसे थोपा नहीं जा सकता है।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में बालक को बाहर से उतना नहीं देना पड़ता है जितना अन्तर्निहित शक्तियों का प्रकाशन करना। बिना आवश्यकता अनुभव किए बालक शायद ही कुछ सीख सके।

शिक्षा का उद्देश्य

फ्रोबेल के अनुसार–''शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का नेतृत्व एवं पथ–प्रदर्शन करना है, जिससे वह अपने तथा अपनी अन्तरात्मा के विषय में अधिक स्पष्ट हो सके, प्रकृति से अपना सम्बन्ध स्थापित कर सके, ईश्वर से तादात्म्य कर सके और उस पवित्र व शुद्ध जीवन की ओर अग्रसर हो सके, जिस ओर उसे यह ज्ञान ले जायेगा।''

फ्रोबेल ने शिक्षा के द्वारा निम्नलिखित लक्ष्यों की प्राप्ति का उद्देश्य निर्धारित किया–

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

- एकता या सामन्जस्य का बोध।
- व्यक्ति में आध्यात्मिक प्रकृति को जागृत करना।
- स्वतंत्रता एवं आन्तरिक संकल्प शक्ति का विकास।
- सामाजिक भावना का विकास।
- चरित्र निर्माण।

शिक्षा की योजना

फ्रोबेल ने बच्चों की शिक्षा के लिये व्यापक योजना बनाई। अपनी शैक्षिक योजना में फ्रोबेल ने बच्चे की आत्म–क्रिया एवं खेल को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना।

फ्रोबेल के अनुसार शिक्षा वस्तुतः विकास की प्रक्रिया है। बालक निरन्तर विकासशील रहता है। उसका विकास ज्ञान पक्ष में संवेदना से सुव्यवस्थित चेतना की ओर कार्य क्षेत्र में प्रवृत्ति मूलक क्रियाओं से संकल्प–युक्त आचरण की ओर होता है। आत्मप्रेरित क्रियाएँ ही उपयोगी होती है। विकास के परिणाम स्वरूप बच्चे नवीन क्रियाओं में संलग्न होते हैं पर इन सब में एक कार्यमूलक एकता बनी रहती है। क्रियाओं के परिणामस्वरूप अभिरूचियों का विकास होता है। अभिरूचि शिक्षा के लिये आवश्यक है। इस प्रकार फ्रोबेल के अनुसार सीखने का आधार क्रिया ही है।

शिक्षा के सिद्धान्त

फ्रोबेल के शिक्षा–सिद्धान्त में खेल का विशेष महत्व है। किण्डरगार्टन में कुछ ऐसे भी खेल खिलाए जाते है जिनसे बालकों में सामाजिकता की भावना की वृद्धि हो। ऐसे खेल बालक आपस में मिल–जुलकर करते है। इन खेलों में नृत्य, संगीत, नाटक आदि आते है। कुछ खेलों द्वारा बालकों के चरित्र का विकास भी किया जाता है। खेलों द्वारा बालक को विषय ज्ञान भी दिया जाता है, जैसे–खेल द्वारा वह गणित, इतिहास, भूगोल, भाषा आदि का ज्ञान प्राप्त करता है। बालकों को शिक्षा देने का एक महत्वपूर्ण साधन है कहानी। कहानी के द्वारा अध्यापक बालकों को नवीन विचारों से प्रभावित कर सकता है।

- एकता का सिद्धान्त।
- आत्माभिव्यक्ति का सिद्धान्त।
- विकास का सिद्धान्त।
- स्वतः क्रिया का सिद्धान्त।

शिक्षण–पद्धति

फ्रोबेल का कथन है–"शिक्षण का उद्देश्य–मनुष्य के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना नहीं है, वरन् उसमें निहित शक्तियों को प्रकट करना है।"

फ्रोबेल ने शिक्षण की प्रक्रिया को विकास की प्रक्रिया माना है। जिस प्रकार एक माली अपने पौधों का पोषण करता है, विकास करता है, उसी मार्ग का अनुसरण एक अध्यापक को करना चाहिए। उसके अनुसार अध्यापक का कार्य केवल निरीक्षण करना है। बालक की प्राकृतिक क्रिया को जानकर उसे उत्तेजित करना ही उसका काम है। इसके लिए उसे बालक के स्वाभाविक विकास का समुचित ज्ञान होना चाहिए। उसे आत्म–निरीक्षण एवं बाल–क्रियाओं का निरीक्षण विधिपूर्वक करना चाहिए। नवीन क्रियाएँ क्रमिक विकास का अनुसरण करती हुई स्वयं प्रस्फुटित होती है, और बालक के अन्तःजीवन से एक कार्यकारी एकता बनाए रखती है। अभिरूचियाँ क्रियाओं का ही परिणाम है और फ्रोबेल सीखना को क्रिया पर ही आधारित करता है। फ्रोबेल ने शिक्षण पद्धति में तीन प्रकार की क्रियाओं का उल्लेख किया है–

1. आवृत्यात्मक क्रियायें।
2. वस्तुओं को उपयोग में लाने वाली क्रियायें।
3. कार्य तथा व्यापार।
   - आत्म–क्रिया
   - खेल
   - सामाजिक क्रियाएँ

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

उपहार

ये ठोस वस्तुएँ विभिन्न आकार की शिक्षण सामग्री (उपहार) होती है। जिनका प्रयोग शिक्षण के समय अध्यापिकाएँ करती है। इसके साथ बालक प्रसन्नतापूर्वक खेलता है तथा रचनात्मक कार्य करता है। अध्यापक इन्हें बच्चों को भेंट स्वरूप देते है इसलिये इन्हें उपहार कहा जाता है। इनमें 20 उपहार होते है। इनमें से कुछ गोलाकार, बेलनाकार, आयताकार, वर्गाकार, घनाकार होते हैं, कुछ उपहार टिकियों के रूप में तथा कुछ नाप तौल के लिये भी होते है। नीचे कुछ उपहार दिये गये है।

1. गोलाकार उपहार गेंदे।
2. बेलनाकार गोले।
3. आयताकार, घनाकार तथा वर्गाकार उपहार।

खेल

फ्रोबेल खेल को बालक की शिक्षा का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है। फ्रोबेल ने खेल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा ''खेल मनुष्य के लिये, विशेषतः बालक के लिये उसके अन्तः जगत एवं बाहा–जगत का दर्पण है और इस दर्पण की भीतर से आवश्यकता है। इस प्रकार मानव–शिक्षा के इतिहास में फ्रोबेल पहला व्यक्ति है जिसने खेल के शैक्षिक महत्व को समझा और इसे शिक्षा का माध्यम बना दिया। फ्रोबेल ने खेल को आत्मप्रेरित, आत्मनियन्त्रित एवं स्वचलित क्रिया माना। खेलों में बालकों की स्वाभाविक रूचि होती है। इससे वे उन्हें अपनी पूरी क्षमता और सामर्थ्य से खेलते हैं। उन्हें स्वानुभव भी प्राप्त होते है। उन्होंने बातया कि खेलों से बालकों में कुशलता और निपुणता का विकास होता है। फ्रोबेल के अनुसार प्रारम्भिक जीवन में मनोरंजनात्मक खेल उपयोगी है। दूसरे स्तर पर रचनात्मक एवं उत्पादक खेलों को बौद्धिक एवं कलात्मक विकास हेतु आवश्यक माना गया। साथ ही सामाजिकता के विकास हेतु समूह नृत्य, समूह गायन जैसे सामूहिक खेलों का भी आयोजन किया जाता है।

पाठ्यक्रम

फ्रोबेल के अनुसार उत्पादन की क्षमता विकसित करना ही सीखना है। सीखने का अर्थ है–आदत सीखना, कौशल सीखना और सच्चरित्रता सीखना। फ्रोबेल पहला आदमी है जिसने पाठ्यक्रम में विषय के अतिरिक्त क्रियाओं को भी महत्त्व दिया है।

फ्रोबेल ने पाठ्यक्रम में निम्नलिखित चार अध्ययन क्रमों को निर्धारित किया है–

- धर्म तथा धार्मिक निर्देश
- प्राकृतिक विज्ञान तथा गणित
- भाषा
- कला

निष्कर्ष

फ्रोबेल ने अपने दार्शनिक विचारों से शिक्षा–प्रक्रिया में एक नवीन भावना उत्पन्न की। उसने विद्यालय को समाज का लघु रूप तथा एक ऐसा स्थान बताया जहाँ बच्चें जीवन व्यतीत करके जीवन का अध्ययन करते हैं और सीखते हैं कि वह शेष समाज से किस प्रकार से सम्बन्धित है। फ्रोबेल ने अपना समस्त जीवन किंडरगार्टन स्कूलों की स्थापना, इन स्कूलों के लिए शिक्षक तैयार करने, अपनी विधि तथा सिद्धान्तों का विकास करने तथा कुछ साधनों के अविष्कार में ही लगा दिया। फ्रोबेल ने सीखने के परम्परागत तरीकों से परे प्राकृतिक विज्ञानों, भाषा, गणित, कला एवं बागवानी को अपनी शिक्षा में विशेष स्थान दिया है। इसके अतिरिक्त फ्रोबेल ही वह प्रथम व्यक्ति है जिसने पाठ्यक्रम में विषय के अतिरिक्त क्रियाओं को भी महत्व दिया है। बचपन के प्रति उनका असीम प्रेम होने के कारण हम कह सकते हैं

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

कि उसने बच्चों के लिये जन्म लिया, बच्चों के लिये जीवित रहा है और बच्चों के लिये मरा। रस्क ने उसके इस कार्य का मूल्यांकन करते हुए लिखा है–''यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पूर्व–विद्यालय आयु के बालकों के प्रशिक्षण के प्रति ध्यान आकर्षित करने तथा एक नवीन प्रकार की शिक्षा संस्था स्थापित करने का श्रेय फ्रोबेल को है।''

किसी भी शिक्षा–सिद्धान्त का इतना अनुसरण नही किया गया, जितना कि फ्रोबेल के सिद्धान्त का। उसके शिक्षा–सिद्धान्तों को प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय शिक्षा तक के सभी स्तरों के लिए आधारीय माना गया है। आधुनिक शिक्षा में आज हम उन्हीं सिद्धान्तों को बीज रूप में निहित पाते हैं जिनका एक शताब्दी पूर्व फ्रोबेल ने प्रतिपादन किया था। उनका भी यही कथन था कि उनके विचारां को स्वीकार करने में लोग एक शताब्दी ले लेंगे।

उन्होंने अपने सिद्धान्तों में बालक को विशेष महत्त्व दिया है। शिशुओं के लिए नर्सरी शिक्षा प्रणाली विकसित की जिसके बालकों के आंगिक एवं बौद्धिक विकास पर जोर दिया है। उन्होंने बालक के विकास के लिए वातावरण का निर्माण आवश्यक माना है।

फ्रोबेल के प्रस्तुत विचारों को उनके बाद के शिक्षाशास्त्रियों ने भी अपनाया तथा समय–समय पर अपने विचारों के अनुसार उनमें बदलाव भी किये। वर्तमान युग में भी फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों को उतनी ही महत्ता दी जाती है जितनी की उनके समय में दी जाती थी। इसका सर्वश्रेष्ठ उदहारण है–'प्री–प्राइमरी स्कूल' जो कि वर्तमान युग में शिशुओं एवं बालकों की बुनियादी शिक्षा के लिये अति महत्वपूर्ण समझे जाते है। इन विद्यालयों में ढाई से 5 वर्ष तक के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते है। इनकी शिक्षा का मुख्य आधार खेल होता है। जिन खेलों को यह उपयोगी मानते है वे निम्नलिखित है–

1. प्रारम्भिक जीवन के लिये मनोरंजन खेल–गयात्मक।
2. दूसरे स्तर पर रचनात्मक एवं उत्पादक खेल जिससे बौद्धिक एवं कलात्मक विकास सम्भव हो।
3. वे खेल जिनसे सामूहिक भावना या 'अनेकता में एकता' की भावना का विकास हो, यथा समूह–नृत्य, गायन आदि।
4. 'उपहारों' का उपयोग करने वाले खेल।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. पाठक, पी0डी0, शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2005–06.
[2]. सक्सेना, नवरत्न स्वरूप, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार', आर0लाल बुक डिपो, मेरठ–2007.
[3]. लाल, रमन बिहारी, 'शिक्षा सिद्धान्त'–रस्तोगी पब्लिकेशन्स–शिवाजी रोड, मेरठ–1982–83.
[4]. पाठक, पी0डी0,'भारतीय शिक्षा वं उसकी समस्याएँ'–विनोद पुस्तक मंदिर, आरा–2005.
[5]. पचौरी, डॉ0 गिरीश, 'शिक्षा के दार्शनिक आधार', आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
[6]. लाल रमन बिहारी, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार', रस्तोगी पब्लिकेशन्स– शिवाजी रोड, मेरठ–2009–10.
[7]. सिंह, कर्ण, 'भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास' गाविन्द प्रकाशन लखीमपुर खीरी–2008–09.
[8]. पाण्डेय, विमलचन्द्र, 'प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास' सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 1989.
[9]. पाण्डेय, राम सकल, विनोद पुस्तक मंदिर–आगरा–1983.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X